ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

दलित साहित्य की वैचारिकी

रणजीत कुमार

शोध छात्र (हिंदी विभाग), दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रस्तावना

दलितों के साथ सदियों से निर्मम, निष्ठुर और अमानवीय व्यवहार निरंतर होते आया है. परिणामस्वरूप उन्हें अनेक समस्याओं को झेलना पड़ा है. परन्तु बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर के विचारों से प्रेरित होकर वे अपनी वेदना एंव व्यथा को मुखर करने का प्रयास किया। दलित साहित्य की वैचारिकी अंबेडकर से निर्मित है। अंबेडकर दलित साहित्य के आधार है।उनका साहित्य और संपूर्ण लेखन दलित जीवन को सम्मान और अधिकार दिलाने के लिए लिखा गया है।अंबेडकर का मानना है कि "जाति ने हालांकि एक काम किया है,इसने हिंदू समाज को पूरी तरह से असंगठित और अनैतिक अवस्था में का दिया है।...यह तो जातियों का समूह मात्र है प्रत्येक जाति अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है। इनका अस्तित्व जाति व्यवस्था के जारी रहने का कुल परिणाम है। जातियां एक संघ भी नहीं बनाती, कोई जाति दूसरी जाति से जुड़ने की भी भावना नहीं रखती, सिर्फ हिंदू मुस्लिम दंगे के समय यह आपस में जुड़ती हैं।"1 दलितों पर होने वाले अत्याचार एवं शोषण के कारण दलित अपनी दशा से उबर नहीं पा रहे थे। जातिवाद एंव छुआछूत के कारण दलितों को नरकीय जीवन व्यतीत करना पड़ता था. शिक्षा,कला, साहित्य और संस्कृति पर केवल उच्च वर्ग का ही अधिकार था ऐसे में अपनी नरकीय हालातों से मुक्ति पाने के लिए तथा अपनी समुचित भागीदारी के लिए दलित छटपटाते रहे पर धीरे-धीरे अपने समाज के दर्द को मुखर करने के लिए एक कारगर हथियार दलितों के हाथ लगा और वह है शिक्षा।

हिन्दी का दलित साहित्य दर्द, पीड़ा,वेदना एवं मुक्ति का दस्तावेज है. वैयक्तिक अनुभूति को समष्टिगत अनुभूति बनाने की पूरी जद्दोजहद एवं दहकते संघर्ष का हू-ब-हू चित्रण दलित साहित्य में मिलता है। दलित साहित्य में यथास्थितिवादी मानसिकता से ग्रस्त पुरानी रूढ़ियों एवं परम्पराओं को ध्वस्त एवं परास्त कर नई समान व्यवस्था लाने का जज्बा दलित राहित्यकारों में दिखाई देता है। यहीं से दलितों की मुक्ति का नया द्वार खुला है, सदियों से दलितों की दीन-हीन दशा, सामाजिक, धार्मिक परिवेशगत असमानता, दमन चक्र संघ दयनीयता आदि को दलित साहित्यकारों ने मुखर किया है। दलित लेखकों ने अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से इस समाज में पशुवत जीवन जीने के लिए अभिशप्त दलितों का चित्र अंकित किया है। दलित आत्मकथाओं के माध्यम से दलित लेखकों ने समाज के ऐसे पहलुओं का चित्रण किया है जो अभी तक अनछुआ था।अपने जीवन के उत्तार-चढ़ाव, अनुभूतियो यथार्थ, शोषण एंव अस्मिता को रौंदने की सवर्णों का वर्चस्ववादी एवं सामंती दृष्टिकोण आदि को आत्मकथकारो ने बेबाकी, एवं सच्चाई के साथ लिखा है।

दलितों द्वारा लिखा जा रहा साहित्य सिर्फ अभिव्यक्ति के लिए नहीं बल्कि एक संपूर्ण आंदोलन की तरह है। "दलित साहित्य का समाज बोध पाठक और श्रोता की चेतना एवं अनुभूति को प्रभावित करने वाली गहन संवेदना से ही पूरा होता है। साहित्य पर समय और समाज का स्पष्ट प्रभाव होता है। साहित्य की रचनाओं में मनुष्य की मस्तिष्क पर पड़ने वाले जीवन और जगत की घटना और स्थितियों का ही प्रतिबिंब होता है। दलित साहित्य की मान्यता है कि कला या साहित्य को सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए कला सृजन में आगे बढ़ना चाहिए इस दृष्टि से दलित साहित्य शुद्ध कला न होकर एक सामाजिक आंदोलन है।"2

दलित साहित्य ने सामाजिक दमन - दयनीयता उत्पीड़न आदि के जरिए दलित वर्ग को एक नया धरातल प्रदान कर उसमें चेतना एवं स्वाभिमान के साथ अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान की है।

महात्मा गौतम बुद्ध, कबीर, महात्मा ज्योतिराव फुले, रामास्वामी पेरियार तथा डॉ. बाबा साहेब के विचारों से दलित साहित्य में वैचारिक पृष्ठभूमि पल्लवित हुई है। शोषण एवं दलित वर्ग की वंचना एवं वर्जन से उन्हें मुक्ति दिलाना अपना कर्तव्य माना है। इन लोगों ने समता मूलक समाज की स्थापना के लिए तथा मानव मुक्ति का परचम लिए दलित व्यक्ति एवं समूह को पुरजोर समर्थन दिया है। धर्म व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों को उन्होंने उकेरा है। जातीयता रूढ़ियां, परंपराएं,धर्मांधता, सामंती और अनैतिकता के जर्जर ढांचे को तोड़ते हुए जियो और जीने दो का सिद्धांत दलितों को बताया है।

दलित साहित्य की वैचारिकी :-

जाति के बिना हिन्दू समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती,जाति का प्रभाव इतना गहरा और व्यापक है कि समाज में व्यक्ति की पहचान उसके गुण,योग्यता,कर्म या व्यवसाय से न होकर उसकी जाति से होती है।भारतीय समाज की संरचना धर्मग्रंथों

पर आधारित है जिसका मुख्य आधार वर्ण – व्यवस्था है।जिसके परिणामस्वरूप छूआछूत और ऊंच-नीच की प्रथा भारत की अद्भुत एवं भयानक सामाजिक वास्तविकता है. किसी भी व्यक्ति से पहला परिचय ' सरनेम या टाइटल' से शुरू होकर जाति-उपजाति की तह तक पहुंचना होता है।इस व्यवहारिक पक्ष को झुठलाया नहीं जा सकता बल्कि इस हकीकत की बारीकियों की तह में जाकर ही दलित चिंतन के वैचारिक आधार को तलाशा जा सकता है।

सुप्रसिद्ध दलित चिंतक कवंल भारती ने लिखा है – "दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है,जिसमे दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रुपायित किया है। अपने जीवन संघर्ष में जिस यथार्थ को भोगा है ,दलित साहित्य उनका उसी की अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए कला का नहीं बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का साहित्य है।"3

दलित चिंतन की एक लंबी परम्परा प्राचीन काल,मध्यकाल एवं आधुनिक काल में गतिमान रही है.लेकिन तो आधुनिक सन्दर्भ में महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. आम्बेडकर ने इस चिंतन को ठोस वैचारिक आधार दिया. महात्मा फुले ने सन 1948ई मे पूना में दलितों के लिए स्कूल खोला। महात्मा फुले को यह एहसास था कि जब तक दलितों और स्त्रियो को आगे नहीं बढ़ाया जाएगा तब तक समाज में व्याप्त अधविश्वास और अन्याय की बेडियां नहीं टूटेंगी। 1873ई॰ में महात्मा फुले ने 'सत्यशोधक समाज की स्थापन करके सामाजिक सांस्कृतिक आदोलन को एक वैचारिक स्वरूप प्रदान किया। सत्यशोधक समाज तीन दिशाओं में कार्य कर रहा था. पहला भक्त और भगवान के बीच विचौलिए बन बैठे परजीवी ब्राहमणों को हटाना। दूसरा साहूकारों और जमींदारों के शिकंजे से किसानों को मुक्त करना और तीसरा सभी जातियों के स्त्री- पुरुषो को शिक्षा प्राप्त कराना। इस आन्दोलन ने स्त्रियों और दलितों को अस्मितापरक बनाया।

दलित चिंतन को सुचवस्थित ढंग से बहुआयामी स्वरूप डॉ. अम्बेडकर ने दिया। डॉ. अम्बेडकर को दलित विमर्श का आधार स्तम्भ माना जाता है, उन्होंने दलितों पर लगे प्रतिबंधों और वर्जनाओं को हटाने के लिए कई कार्यक्रम और आन्दोलन चलाए। दलित अधिकारो के लिए चलाए गए आन्दोलनों में मंदिर प्रवेश, पानी के अधिकार के लिए आंदोलन तथा मनुस्मृति जलाना आदि प्रमुख है। इन्होंने धार्मिक शास्त्रों,ग्रंथो एवं मिथकों की सत्यता पर प्रश्न लगाकर वैज्ञानिक एवं विवेकशील सोच को विकसित किया। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दलित मिडिया को दलित चेतना का वाहक बनाया, जाति तोड़ो अभियान चलाया, धर्मातरण का कार्यक्रम चलाया. बहुजन समाज की अवधारणा को पुष्ट कर दलित आन्दोलन को व्यापक बनाया और स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा के सिद्धांतो पर आधारित दलित अस्मिता और आत्मसम्मान के लिए संघर्षशील बनाया। इन्होंने शिक्षित बनो,संगठित रहो और संघर्ष करो का नारा दिया। इस प्रकार डॉक्टर अंबेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन को एक नई दिशा मिली। डॉ आंबेडकर के द्वारा चलाए गए आंदोलन से पूरे देश का दलित वर्ग जुड़ता चला गया अंबेडकर द्वारा चलाए गए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक आंदोलन ने दलित चिंतन की सुगठित वैचारिक भाव भूमि तैयार की।

दलित चेतना:-

दलित चेतना का दार्शनिक और वैचारिक आधार का स्रोत गौतम बुद्ध ही रहे हैं।बुद्ध भारतीय इतिहास के प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने वर्ण - व्यवस्था की औचित्य को चुनौती दी और उसे अवैज्ञानिक और मानवीय बताया।श्रावस्ती प्रवास के दौरान सुनीत नामक भंगी को अपने संघ में शामिल करके दलितोद्वार का मार्ग प्रशस्त किया जो आने वाले युगों - युगों तक दलित मुक्ति का मार्ग अवलोकिता करता रहा।

बाबूराव बागुल का मानना है कि – "दलित चेतना साहित्य और आम आदमी के संबंधों को व्यापकता देती है।"4

भक्ति काल में दलित संत कवियों की बनियों में चेतना की वह चिंगारी सुलगती रही जो आधुनिक काल तक आते-आते डॉक्टर अंबेडकर के विशालतम व्यक्तित्व के रूप में धधक उठी। आधुनिक दलित चेतना की प्रबल प्रेरणा डॉक्टर अंबेडकर का युग प्रवर्तक व्यक्तित्व और कृतित्व है। विशेष रूप से महाराष्ट्र से शुरू हुए दलित साहित्य आंदोलन पर उनके विचार और दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि- "दलित चेतना का सीधा संबंध अंबेडकर दर्शन से है, वही प्रेरणा स्रोत भी हैं। सामाजिक उत्पीड़न,सामंती सोच,वर्ण - व्यवस्था से उपजी ऊँच - नीच ने दलितों को शताब्दियों से मानसिक गुलामी में जकड़ कर रखा हुआ है।उसकी मुक्ति के तमाम रास्ते बंद थे उसे गुलामी से मुक्त होने का विचार ही दलित चेतना है। जिसे ज्योतिबा फुले और डॉक्टर अंबेडकर ने दार्शनिक आधार दिया।"5

महात्मा फुले:-

महात्मा फुले सामाजिक दासता के विरुद्ध सतर्क आवाज उठाने वाले पहले व्यक्ति थे। फुले की सर्वाधिक प्रसिद्ध व लोकप्रिय पुस्तक गुलामगिरी है। फुले पहले भारतीय हैं जिन्होंने इस पुस्तक के द्वारा फ्रांसीसी राज्य क्रांति के तीन तारों क्षमता, स्वतंत्रता एवं भाईचारा में निहित मानवतावादी आदर्शो को प्रभावशाली तरीके से भारतीय समाज को विशेष कर निम्न जातियों को

परिचित कराया। गुलामगिरी 16 अध्याय में प्रश्नोत्तर शैली में लिखी गई है प्रथम 9 अध्याय भारतीय समाज पर ब्राह्मणवादी वर्चस्व से संबंधित है इस पुस्तक का प्रारंभ शूद्रों को दी गई चेतावनी से होती है- " देखो मेरे शुद्र बंधुओ! ब्राम्हण तुम्हारा शोषण कर रहे है।"6

इस पुस्तक की शुरुआत उन्होंने होमर के प्रसिद्ध कथन से की है- ' अपनी शुचिता को मनुष्य उसी दिन को देता है,जिस दिन वह गुलाम बनता है।'

ज्योतिबा राव फुले द्वारा स्थापित महाराष्ट्र में 'सत्यशोधक समाज' पहला दलितोद्वार आंदोलन साबित हुआ। इसके पीछे फुले जी का अपना अनुभव भी था। उनके पिता गोविंद राव ने उन्हें 7 साल की उम्र में स्कूल में दाखिला दिलाया था किंतु एक ब्राह्मण क्लर्क की सलाह पर स्कूल से हटाकर अपने सब्जी उगाने के फॉर्म में लगा दिया।अछूत कन्या पाठशाला में अछूत को शिक्षित करने के कारण उनके पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया।महाराष्ट्र का पुरुष प्रधान हिंदू समाज का रूढ़िवादी इतना मजबूत था कि उन दिनों स्त्रियों के लिए जूते – चप्पल तक का इस्तेमाल करना वर्जित था।स्त्री शिक्षा पारिवारिक सीमा, मान – मर्यादाओं का उल्लंघन और पुरुषवादी अधिसत्ता को चुनौती मानी जाती थी। ज्योतिबा फुले ने कुर्तियां और धर्मांधता पर कड़े प्रहार किए। वे कहते हैं कि – "स्त्री और पुरुष में किसी प्रकार का भेदभाव किए बिना सबको समान शिक्षा का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए वे सब शब्दों में रहते हैं कि जो वेदों की प्रशंसा करते हैं उनको बुद्धिहीन पशुओं में भेज देना चाहिए।"7

महात्मा फुले की दृष्टि में दलित:-

ज्योतिबा फुले का ब्राह्मणवाद विरोधी कार्यक्रम दलित मुक्ति के कई आयामों को खोलता था। उन्होंने गुलामगिरी में भारतीय समाज में ब्राह्मणवादी विचारधारा, उसे स्थापित करने वाले तत्वों और सदियों से जाति प्रथा के बने रहने का रहस्य बताया है।फुले जी का मानना है कि वैदिक आर्य यहाँ के मूलनिवासी नहीं है। इसलिए यहाँ के मूलनिवासियों से उनका भावनात्मक सम्बन्ध नहीं बन पाता है। शूद्रों के साथ उनका अमानवीय व्यवहार यही बताता है। इसके विपरीत शुद्र सभी तरह के दमन और उत्पीड़न के बावजूद भारतीग समाज का स्नायुतन्त्र रहे हैं।बहुजन समाज की दुर्गत के लिए विद्यहीनता को जिम्मेदार मानते हुए वह कहते हैं –"विद्या बिन मति गई, मति बिन नीति गई, नीति बिन गति गई, गति बिन धन गया, धन बिन शुद्र दलित हुए,इतना घोर अनर्थ अविद्या से हुआ।"8

महात्मा फुले ने आगस्त 1848ई में अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के सहयोग से पुणे के विदेवाड़ा में अछूत जातियों की शिक्षा के लिए स्त्री-शिक्षा का स्कूल खोला। यह वह समय था. जब कढ़िवादी स्त्री शिक्षण को ईश्वर और धर्म की सत्ता के विरुद्ध अपराध मानते थे। उन्हें लगता था कि स्त्रियों, शुद्रो- अतिशुद्रो के बीच आधुनिक शिक्षा के प्रसार से ईश्वर निर्मित वर्ग-व्यवस्था के आदर्शो का लोप हो जाएगा। फुले जी कहते हैं – "मनु जलकर खाक हो गया जब अंग्रेज आया। ज्ञान रूपी मां ने हमको दूध पिलाया।अब तो तुम आओ। भाइयों!पूरी तरह जला के खाक कर दो, मनुवाद को। हम शिक्षा पाते ही पाएंगे वह सुख। पढ़ लो मेरा लेख... जोती कहे।"9

आज जातिवाद के बंधन अंशत: ढीले पड़े है। लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ सापेक्षत: दृढ़ हुई है। फिर भी भारतीय समाज की धमनियों में जाति – वर्णवाद का गाढ़ा खून व्याप्त है. फुले ने महारों के लिए पहली पाठशाला खोली थी। वह शुद्रों की शिक्षा की पहली मुहिम थी।

दलित साहित्य और इतिहास –

दलित साहित्य पर फूल के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है। दलित साहित्य का लक्ष्य दलित इतिहास एवं संस्कृति के प्रति दलित मानस में जागरूकता पैदा कर सामाजिक परिवर्तन को सिर्फ राजनीतिक आंदोलन का ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक नवाचार का रस देकर दलितों को उसके लिए तैयार करना भी है।

ज्योतिबा फुले ने जिस इतिहास से दृष्टि को जन्म दिया उसकी अभिव्यक्ति विविध साहित्यिक रूपों में हुई।उसे साहित्य में इतिहास के अनुभव के साथ वर्तमान की अनुभूति और भविष्य के प्रति जागरूकता की अभिव्यक्ति हुई है। वह दलित अस्मिता की पहचान किसी अन्य के द्वारा परोसी गई दृष्टि के माध्यम से नहीं बल्कि स्वयं के माध्यम से करना चाहता है। वह पूरे भारतीय साहित्य को हिंदू साहित्य मानकर अस्वीकार करता है क्योंकि ब्राह्मणवादी व्यवस्था में थोड़े से ब्राह्मण और क्षत्रियों का ही अधिकार रहा है। वेद, पुराण,स्मृतियों में देव कथाओं के चमत्कारों, संस्कृत और हिंदी के महाकाव्य में ब्राह्मण संस्कृति के रक्षक प्रतिनिधि महानायकों शिव,विष्णु,ब्रह्मा,राम - कृष्ण की ऐश्वर्य कथाएं भरी पड़ी है। साहित्य की विषय वस्तु ही नहीं उसके मूल्यांकन के मानदंड भी उन्हीं के विचार थे।

बाबा साहेब डॉ भीम राव अम्बेडकर -

भारत में समता मूलक सामाजिक न्याय पर आधारित नए समाज के निर्माण के लिए सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं मौलिक चिंतन डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर का है। बाबा साहब के चिंतन ने तत्कालीन एवं वर्तमान भारतीय समाज को समझने की नई दृष्टि दी। उसी दृष्टि की पहल पर 20वीं सदी के अंतिम दो तीन दशकों में दलित विमर्श तेजी से उभरा। एक नई सामाजिक दृष्टि से संपन्न साहित्य में ऐसा आंदोलन उभरा जिसका अभिप्राय था मनु द्वारा समर्थित ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था का उच्छेद और उसमें अस्पृश्यता, दमन और शोषण उत्पीड़न के शिकार,अछूतों-अंत्याजों के दुख-दर्द को केंद्रीय चित्रण के रूप में स्वीकृति। यह एक समवेत प्रयास

था। जिसके परिणाम स्वरुप भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य सृजन की नई प्रवृत्ति का विकास हुआ। बाबा साहब का मानना था कि- "प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित किया जाना चाहिए, हर एक व्यक्ति में अपनी रक्षा की क्षमता होनी चाहिए।अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह बहुत जरूरी भी है।"10

डॉ॰ अंबेडकर : दलित साहित्य की वैचारिकी –

डॉ अंबेडकर को पूरा विश्वास था कि किसी भी सामाजिक व्यवस्था में राजनीतिक अधिकारों के बिना सामाजिक मुक्ति की कल्पना असंभव है क्योंकि हर सामाजिक व्यवस्था की अपनी राजनीति होती है। भारतीय समाज में जाति विहीन समाज की स्थापना के लिए बाबा साहब ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया क्योंकि हिंदू धर्म की तरह बौद्ध धर्म में सामाजिक विभाजन जैसी चीज नहीं है। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि " मैं हिंदू के रूप में पैदा हुआ इस पर तो मेरा वश नहीं था मगर मैं हिंदू के रूप में मरूंगा नहीं।"11

डॉ॰ अंबेडकर ने अपने व्यक्तिगत जीवन में जातीय अपमान का दंश भोगा था। उनकी पढ़ाई अमेरिका और इंग्लैंड में हुई थी उन्होंने अपना जीवन सरकारी कार्यालय में एक लिपिक के रूप में शुरू किया किंतु शीघ्र ही सवर्ण हिंदुओं के विरोध के कारण उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। अपने जीवन की पाठशाला में उन्होंने यह अनुभव किया कि छुआछूत जाति - प्रथा की देन है। जब तक उसका अस्तित्व है अस्पृश्यता बनी रहेगी। बाबा साहब की दृष्टि में दलित को विदेशी उपनिवेशवाद से मुक्ति का फायदा तब तक नहीं मिल सकता जब तक भारतीय समाज के आंतरिक उपनिवेशवाद अर्थात जाति प्रथा से उन्हें मुक्ति नहीं मिलती। बाबा साहब की दृढ़ मान्यता थी कि अछूतों – अस्पृश्यो की समस्याओं को सुलझाए बिना भारत की आजादी उसकी बहुसंख्यक दलित जनता के लिए अर्थहीन है। छुआछूत तभी गायब होगा जब पूर्ण रूप से हिंदू समाज व्यवस्था खासकर जातिवाद समाप्त होगा। सामाजिक मुक्ति में दलित मुक्ति है।यह समझ अंबेडकर की थी। दलित समाज जान चुका है कि शिक्षा उसका बुनियादी आधार है। अभी तक तो वह यह मान कर चल रहा था, कि शिक्षा उनके लिए है ही नहीं। जब उसे अपने अधिकार का पता चला तो उसने अपने प्रति होने वाली असमानता का विरोध आरंभ किया- "आप लोग हमारे मोहल्ले के लड़के को इस तरह डोम कह कर अलग-अलग नहीं बैठा सकते।"12

दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि:-

दलित साहित्य की नई प्रवृत्ति के विकास और दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि के निर्माण में आज के उत्तर आधुनिक विमर्श के अंतर्गत अस्मिता विमर्श अथवा उपेक्षित समुदायों को केंद्र में प्रतिष्ठित कर उनके विषय में नए तरीके से सोचने की पहल से भी मदद मिली। मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर होने वाली बहस से भी दलित चेतन की वैचारिक निर्मिति को प्रोत्साहन मिला। दलित साहित्यकारों ने संस्कृति और साहित्य से भिन्न समाज के हाशिये से अपने नायक चुने जिन्हें वर्ण व्यवस्था पालकों ने अपवित्र मानकर तिरस्कृत किया था। साहित्यकारों ने नायक नायिका के शास्त्रीय भेद ठुकराया। पूजनीय और वीर समझे जाने वाले बलशाली देवी - देवताओं नायकों राजाओं की जगह मलेच्छ ,राक्षस, दस्यु, अनार्य, खल,नाग, शुद्र ,दास और ऐसे ही अनावश्यक विशेषणों से पुकारे जाने वाले जन समुदाय के सदस्यों को नायक के रूप में स्वीकार किया। दलित साहित्य ने अपने वैचारिक आधार को खड़ा करने के लिए कुछ प्रचलित मिथकों मसलन शम्बुक और एकलव्य का भी प्रयोग किया। साहित्यकारों ने वीरांगना ऊदा देवी,झलकारी बाई, पासी आकिद जैसे कुछ नए मिथकों की भी खोज की। दलित साहित्यकारों ने इन मिथकों के माध्यम से दलित इतिहास की शौर्य कथा तथा उसके संघर्षपूर्ण अतीत को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की। उन सब का उद्देश्य आनंद और मनोरंजन नहीं बल्कि समाज को झकझोरने और जगाने के लिए किया गया प्रयत्न था। 20 मई 1927 को बहिष्कृत भारत के अंक में डॉक्टर अंबेडकर और अस्पृश्य बंधुओ को संबोधित करते हुए लिखते हैं- "जो डरता है ब्रह्मराक्षस उसी के पीछे लगता है।सर्वशक्तिमान भगवान को बलि देने के लिए शेर जैसे हिंसक पशुओं का कोई उपयोग नहीं करता, उसके विपरीत बेचारे मुर्गो-बकरों की बलि दी जाती है।पर तुम तो शेर हो।"13

निष्कर्ष:-

दलित आंदोलन दलित साहित्य का वैचारिक आधार है। महात्मा बुद्ध और ज्योतिबा फुले का दर्शन तथा डॉ अंबेडकर का जीवन संघर्ष उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि है। सभी दलित रचनाकार इस बात से सहमत हैं कि ज्योतिबा फुले ने स्वयं क्रियाशील रहकर सामंती मूल्यों और सामाजिक गुलामी के विरोध का स्वर तेज किया था। ब्राह्मणवादी सोच और वर्चस्व के विरोध में उन्होंने आंदोलन खड़ा किया था यही कारण है कि जहां दलित रचनाकारों ने ज्योतिबा फुले को अपना विशिष्ट विचारक माना है वही डॉक्टर अंबेडकर को अपना शक्तिपुंज स्वीकार किया है। भारतीय साहित्य में दलित लेखन और दलित विमर्श के हस्तक्षेप का मुख्य कारण जाति और वर्ण व्यवस्था पर आधारित भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था रही है। दलित साहित्य और चिंतन का लक्ष्य जाति वर्ण का उन्मूलन तथा दलितों से जबरन छीन ली गई मानवीय गरिमा की पुनः प्राप्ति है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1- डॉ. बी. आर. अंबेडकर,आचार्य जुगुल किशोर बौद्ध (अनुवादक),'जातिभेद का बिजनाश' सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली – पृष्ठ - 35
2- http://www.apnimaati.com/2016/01/blog-post_68.html
3- दलित साहित्य की भूमिका: कवंल भारती,पृष्ठ – 67
4- दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र,ओमप्रकाश वाल्मीकि,राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली,पृष्ठ 30-31
5- वही पृष्ठ 30
6- गुलामगिरी,ज्योतिबा फूले,(अनुवादक:विमलकीर्ति) सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली -पृष्ठ -3
7- विमलकीर्ती,महात्मा फूले, रचनावली खंड -1,आमुख से – राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 2002
8- ज्योतिबा फूले,गुलमगिरी (अनुवादक: विमलकीर्ति) आवरण पृष्ठ,सम्यक प्रकाशन दिल्ली – 2006
9- विमलकीर्ति,महात्मा फूले,रचनावली खंड -1,राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली संस्करण – 2002 पृष्ठ – 236
10- डॉ. बी. आर. अंबेडकर,आचार्य जुगुल किशोर बौद्ध (अनुवादक),'जातिभेद का बीजनाश' ,सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली,पृष्ठ – 35
11- वेब लिंक : https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1916353#:~:text=13%20%
12-डॉ. संजय बाग,हीरो (कहानी) ,दलित अस्मिता पत्रिका,अप्रैल – जून – 2013,पृष्ठ -4
13- सिंह बेचैन,(अनु. स.),2019, बहिष्कृत भारत डॉ. अंबेडकर,गौतम बुक सेंटर,दिल्ली,पृष्ठ -71

वेब लिंक

https://en.wikipedia.org/wikiAnnihilation of caste

https://en.wekipedia.org/B.R.Ambedkar

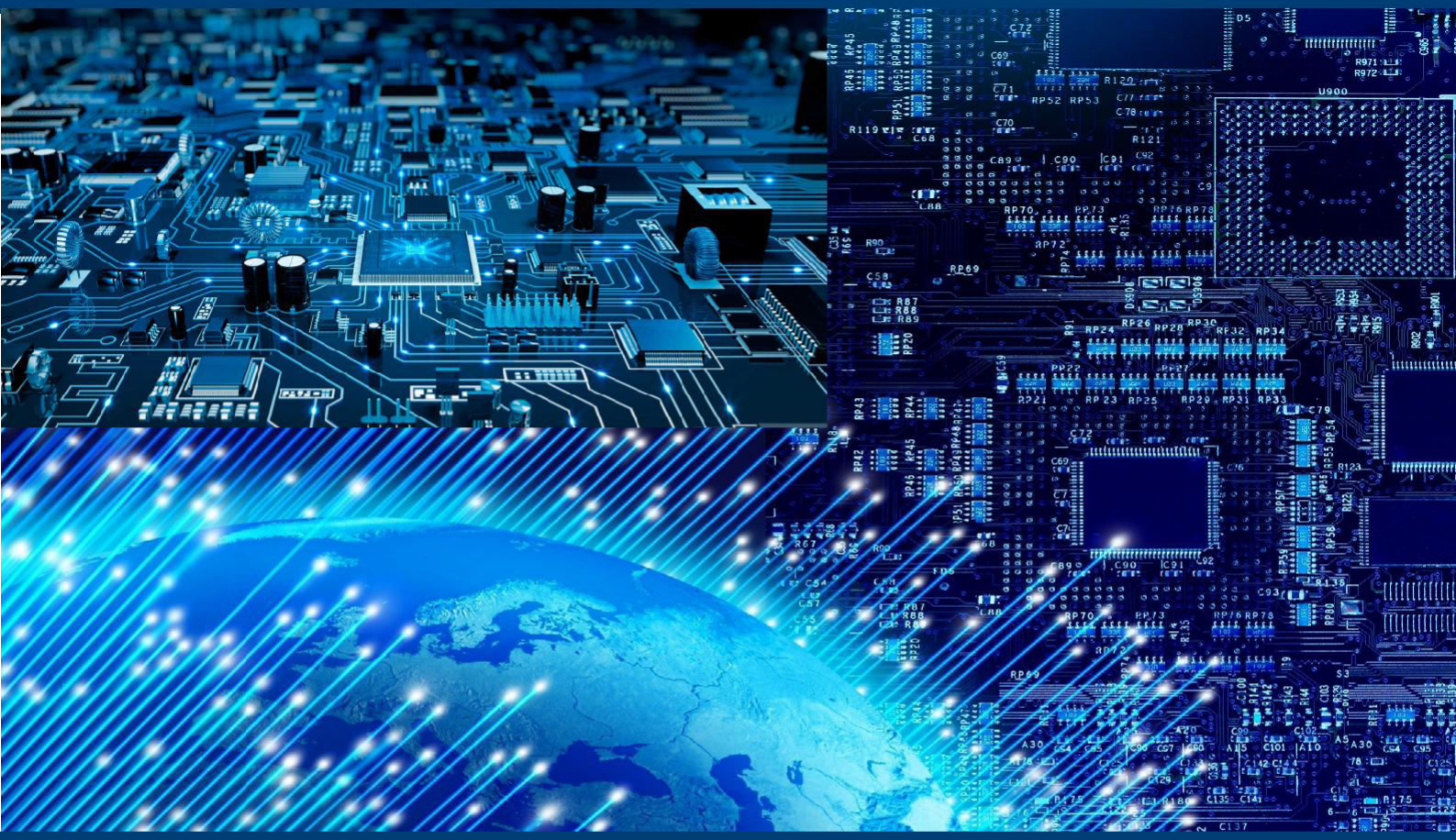

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |